Lecture Series no:- 55
26.05.2020

For Sociology
B.A. (Hon's) PART - I
Paper - I
Unit - XII (Social Control)

Dr. Sandhya Kumari
Assistant Professor
Department of Sociology
A.N.D. College, Shahpur
Patory, Samastipur

Topic - MEANS OR AGENCIES OF SOCIAL CONTROL

(सामाजिक नियन्त्रण के साधन अथवा अभिकरण)

Sol- सामाजिक नियन्त्रण के व्यक्ति, समितियाँ और संस्थाएँ विभिन्न तरह के व्यक्ति, समितियाँ और संस्थाएँ होती हैं। साथ ही इनके उद्देश्य, हित, विचार आदि में भी अत्यधिक भिन्नता होती है। इस कारण सामाजिक नियंत्रण की विधियों अथवा साधनों में भी भिन्नता पाई जाती है।

(1) परिवार (family) - परिवार व्यक्ति के समाजीकरण का प्रमुख साधन है। परिवार ही उसे समाज में प्रचलित आचार-विचार, रीति-नीति, आदर्श और विश्वासों से परिचित करवाता है और समाज में माने जाने वाले नियमों का पालन करवाता है। परिवार का ये सभी बातें सामाजिक नियंत्रण में सहायक होती हैं। परिवार का अपने सदस्यों के कारण और उनके आचरण और व्यवहार पर कड़ा नियंत्रण होता है और उन पर नियंत्रण होता है और उन पर नियंत्रण इस बात पर दबाव पड़ता रहता है कि वे समाज के नियमों तथा आदर्शों का पालन करें। उनका उल्लंघन समाज-विरोधी कार्य समझा जाता है और यदि ऐसा कोई करता है तो उसे अपने परिवार के परिजनों - माता-पिता, भाई-बहन, पति-पत्नी और बच्चों द्वारा अपमान, तिरस्कार या निन्दा का पात्र बनना पड़ता है। स्वभावतः जो उसके परिजन हैं और जिनके बीच उसे अपने जीवन का अधिकतर समय बिताना पड़ता है। उनके द्वारा तिरस्कार या निन्दा का भय उसे सदैव ऐसे कार्यों को करने से रोकता है जो समाज-विरोधी है। इस प्रकार स्पष्ट है कि सामाजिक नियंत्रण के एक साधन के रूप में परिवार का महत्व वास्तव में अत्यधिक है।

(2) जनरीतियाँ (Folkways) - प्रथाओं की भाँति जनरीतियाँ भी सामाजिक नियंत्रण के प्रभावपूर्ण साधन हैं। जनरीतियों को जानबूझकर नहीं बनाया जाता बल्कि "समान आवश्यकता का सामना करने की जरूरत होने पर प्रायः अनेक व्यक्तियों द्वारा एक साथ या कम से कम एक प्रकार से मामूली कार्यों को बार-बार दुहराने से" ही जनरीतियों की उत्पत्ति होती है।

Scanned with CamScanner

इसीलिए इसको चुनाव विचारपूर्वक न किया जाकर "सब करते हैं, इसीलिए हम भी करते हैं" के आधार पर अचेतनावस्था में धीरे-धीरे आप होता रहता है। यही कारण है कि जनरीतियाँ अत्यधिक शक्तिशाली होती हैं और इनकी अवहेलना सरल नहीं होती।

(3) कानून (Law) — सामाजिक नियंत्रण के औपचारिक (Formal) साधनों में कानून सर्वप्रमुख है। प्राचीन काल में समाज सादा और सरल था, इस कारण सामाजिक नियंत्रण का काम प्रथा, परम्परा, विश्वास आदि द्वारा ही चल जाता था परन्तु आधुनिक समाज आकार में बहुत बड़ा हो गया, साथ ही साथ स्वरूप में अत्यंत जटिल भी। आज के समाजों में अनेक शक्तिशाली स्वार्थ समूह कार्य करते रहते हैं। इन पर प्रथा या रूढ़ियों के द्वारा नियंत्रण कर सकना कदापि सम्भव नहीं है। इन पर नियंत्रण रखने के लिए तो कानून ही अति उत्तम साधन है। कानून प्रभुता-सम्पन्न राज्य द्वारा बनाया जाता है, इस कारण यह उस राज्य के क्षेत्र में रहने वाले सभी लोगों और समितियों पर बिना किसी अपवाद के समान रूप से लागू होता है। साथ ही इन कानूनों को लागू करने के लिए सरकार की ओर से नियमित व्यवस्था या संगठन होता है और जो इन कानूनों को तोड़ते हैं उन्हें सजा देने की भी व्यवस्था अदालत, जेल आदि द्वारा की जाती है। कानून द्वारा दण्ड देने की जो व्यवस्था होती है, उसका भय व्यक्ति को ऐसे कार्यों को करने से रोकता है जो कानून के विरोध होता है। इस प्रकार भी व्यक्ति का व्यवहार नियंत्रित होता है। इस कारण से भी कानून सामाजिक नियंत्रण का एक महत्वपूर्ण साधन बन जाता है।

(4) आचार (Morals) — समाज में कुछ इस प्रकार के विचार भी विकसित हो जाते हैं कि क्या उचित है और क्या अनुचित है? इन्हीं को आचार कहा जा सकता है। प्रो० डेविस के अनुसार "आचार कर्तव्य की आंतरिक भावना है, जिसमें उचित-अनुचित का व्यवहार सन्निहित हो।" इसलिए आचार हम कुछ कार्यों या व्यवहार को करने की अनुमति देते हैं और उन्हें यह बताते हैं कि उन्हें हम करना चाहिए, क्योंकि वे उचित हैं।

(5) प्रथाएं (Customs) — प्रथा व्यवहार के उन मान्य तरीकों को कहते हैं जिन्हें समाज के अधिकतर सदस्य बहुत दिनों से मानते आ रहे हैं। इसी कारण प्रत्येक प्रथा को सामाजिक स्वीकृति प्राप्त होती है, अर्थात् जो लोग प्रथा को मानते हैं उनका यह दबाव अन्य व्यक्तियों पर पड़ता है।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

उनको विरोध रूप से समाज में अच्छा व्यवहार करने को बाध्य करता है।

(6) धर्म (Religion) — प्रत्येक धर्म का आधार एक ऐसी अलौकिक शक्ति में विश्वास है जो कि मानव के प्रत्येक कार्य को देखती रहती है तथा मानव को दण्ड भी दे सकती है। इसी दण्ड के भय के कारण व्यक्ति धर्म से सम्बन्धित नियमों का पालन करता है। इसी प्रकार प्रत्येक धर्म में पाप और पुण्य, नरक और स्वर्ग की अवधारणा भी निहित होती है। पाप करने पर नरक तथा पुण्य करने पर स्वर्ग की प्राप्ति होती है। इस धारणा से व्यक्ति ऐसे कार्य करने को प्रेरित होते हैं ताकि उन्हें स्वर्ग की प्राप्ति हो सके।

(7) जनमत (Public opinion) — वास्तव में जनमत जनता का ही मत होता है और उसके माध्यम से जनता की सामान्य इच्छा ही व्यक्त होती है। और इसलिए इसका प्रभाव प्रत्येक व्यक्ति पर अत्यधिक पड़ता है। सरल समाज में जनमत कितना प्रभावशाली होता है, इसका उदाहरण गाँव-पंचायत है।

(8) प्रचार (Propaganda) — आज प्रचार अति महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली सामाजिक नियंत्रण के साधन के रूप में माना जाता है। प्रचार व्यक्तियों तथा समूहों के व्यवहार एवं कार्यों के नियंत्रण के साधन के रूप में कार्य कर रहा है। समाचार-पत्र, टेलीविजन, रेडियो, सिनेमा, नेता आदि ऐसे अनेक प्रचार के साधन हैं जो अपने-अपने सुझावों एवं विधियों द्वारा व्यक्ति के व्यवहार को नियंत्रित करते रहते हैं।

(9) सामाजिक सुझाव (Social Suggestions) — सामाजिक सुझाव प्रस्तुत करने के विभिन्न साधन हो सकते हैं — (अ) पहला साधन यह है कि कोई भी समाज विभिन्न क्षेत्रों में सफल व्यक्तियों को प्रतिष्ठा और लोकप्रियता प्रदान करता है। सफल व्यक्तियों का उदाहरण समाज में फैलता है और सभी लोग उसका अनुकरण करने लगते हैं। (ब) सामाजिक सुझाव इस रूप में भी हो सकता है व्यक्ति में यह भावना भर दी जाए कि वह व्यक्तित्व का विकास आदर्श के रूप में करे (स) भौतिक वस्तुओं में किताब, मूर्ति आदि के द्वारा भी सामाजिक सुझाव प्रस्तुत किया जा सकता है। (द) शिक्षा के माध्यम से (इ) प्रचार के माध्यम से।

(10) विश्वास (Belief) — विश्वास मुख्यतः तीन प्रकार के हो सकते हैं — (अ) यह विश्वास कि समाज द्वारा स्वीकृत कर्तव्यों का पालन करना ही उचित है, उनकी अवहेलना उचित नहीं (ब) यह विश्वास कि जन्म और मृत्यु के झंझट में

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

पानी सो न पीना [illegible] पानी- पानी करो पर [illegible]
अतः नास्तिक व्यक्ति को सदकार्य करना ही चाहिए।
(ख) यह विश्वास कि अनुचित या बुरे कार्यों का परिणाम सदैव बुरा होता है और उसका दण्ड भी व्यक्ति को मिलता है।
(ग) यह विश्वास कि स्वर्ग और नरक भी एक वास्तविकता है।
(घ) यह विश्वास कि पूर्वजों की आत्मा अमर है और वे हम लोगों के समस्त कार्य-कलापों को देखते हैं और हमारे सभी बुरे कर्मों से उन्हें कष्ट होता है।

(11) पुरस्कार और दण्ड (Reward and punishment) — पुरस्कार और दण्ड भी उन महत्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक प्रक्रियाओं में से हैं जिनका सामाजिक नियंत्रण के एक साधन के रूप में अत्यधिक महत्व है। पहले पुरस्कार को लिया जा सकता है। अच्छा करने पर मानव पुरस्कार के भागीदार बनता है। इसी प्रकार दण्ड भी सामाजिक नियंत्रण के एक साधन के रूप में कार्य करता है। यदि व्यक्ति समाज की अवहेलना करता है और ऐसा करने पर दण्ड मिलता है तो भविष्य में ऐसी बहुत कम सम्भावनाएँ होती हैं कि वह कोई गलत कार्य करे। दण्ड सामाजिक भी हो सकता है और राज्य के द्वारा दिया गया भी हो सकता है। सामाजिक दण्ड का विकास का क्षेत्र सरल समाजों में अधिक होता है, जबकि द्वैतीयक समाजों में कानूनी दण्ड अधिक प्रचलित होता है।

(12) राज्य (State) — राज्य भी एक अत्यंत महत्वपूर्ण रूप में सामाजिक नियंत्रण का कार्य करता है। राज्य अपनी शक्ति से यह कार्य करता है। राज्य के प्रतिनिधि के रूप में पुलिस को अपराधों या समाज-विरोधी कार्यों को न होने देने के लिए अपराध के प्रति शक्ति का प्रयोग करना पड़ता है।

(13) शिक्षा-व्यवस्था (Education System) — आज सरकार कानूनों के साथ-साथ शिक्षा का महत्व भी सामाजिक नियंत्रण के साधन के रूप में बढ़ता जा रहा है क्योंकि शिक्षा के बिना कानून का उचित पालन और नागरिकता के आदर्शों को समझना व्यक्ति के लिए कदापि सम्भव नहीं।

(14) नेता (Leader) — "सामाजिक नियंत्रण में पहला पग शायद प्रभावशाली व्यक्तियों द्वारा ही उठाया गया है। नेतृत्व और अधीनता पशु-जीवन में देखने को मिलते हैं।" गिलिन और गिलिन ने कहा है कि नेतागण भी सामाजिक नियंत्रण के प्रभावशाली साधन हैं। दुर्खीम कहते हैं कि नेतागण सामुदायिक जीवन के प्रतिनिधि होते हैं।

समाप्त

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner